Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

गीताश्री के उपन्यास 'हसीनाबाद' का राजनैतिक विश्लेषण

[1]डॉ. आँचल श्रीवास्तव, [2]रश्मि उपाध्याय
[1]शोध निर्देशक, सह. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]शोधार्थी, पी.एच.डी., हिन्दी विभाग, डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :–

समकालीन हिन्दी साहित्य में राजनीतिक यथार्थ का चित्रण एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। गीताश्री का उपन्यास हसीनाबाद इसी प्रवृत्ति का सशक्त उदाहरण है। यह कृति केवल एक बस्ती की कथा नहीं है, बल्कि उसमें निहित राजनीतिक संरचना, सत्ता संबंधों और सामाजिक असमानताओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में उपन्यास का राजनीतिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है, जिसमें विशेष रूप से सत्ता के केंद्रीकरण, भ्रष्टाचार, वोट बैंक की राजनीति तथा हाशिए के समाज के शोषण को केंद्र में रखा गया है। उपन्यास में 'हसीनाबाद' एक ऐसे समाज का प्रतीक बनकर उभरता है, जहाँ राजनीतिक शक्तियाँ जनसाधारण के हितों की उपेक्षा करते हुए अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगी रहती हैं। चुनावी राजनीति के दौरान जनता को केवल एक साधन के रूप में देखा जाता है, जबकि उनके वास्तविक मुद्दों को अनदेखा कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, उपन्यास में सामाजिक विषमता, गरीबी और अवसरों की असमानता को भी राजनीतिक व्यवस्था से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में स्त्री पात्रों की स्थिति विशेष रूप से दयनीय है, जहाँ वे राजनीतिक स्तरों पर शोषण का सामना करती हैं। गीताश्री के उपन्यास हसीनाबाद समकालीन भारतीय राजनीति की जटिलताओं को उजागर करने वाली एक महत्वपूर्ण कृति है, जो पाठकों को राजनीतिक चेतना के प्रति जागरूक करती है।

मुख्य शब्द :– हसीनाबाद, गीताश्री, राजनीतिक मूल्य, सत्ता संरचना, समकालीन साहित्य

प्रस्तावना :–

किसी निश्चित नीति के अनुसार नियमों एवं सिद्धांतों के माध्यम से राज्य का संचालन करना ही राजनीति कहलाता है। देश के शासन और उसकी व्यवस्थाओं से संबंधित आदर्शों को राजनीतिक मूल्य कहा जाता है। किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास और प्रगति में राजनीतिक मूल्यों का महत्व उतना ही आवश्यक होता है, जितना मानव जीवन के उत्थान के लिए मानवीय मूल्यों का होता है। डॉ० मोहिनी शर्मा के अनुसार, ''समाज के सभी प्रकार के मूल्यों के स्वरूप निर्धारण की दृष्टि से राजनीतिक मूल्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।''[1]

राजनीति का अर्थ 'राजनीति' शब्द 'राज' और 'नीति' दो शब्दों के योग से बना है। प्रायः राज से राज्य व शासन तथा 'नीति' से नियम का अर्थ लगाया जाता है अर्थात् किसी भी राज्य को चलाने के लिए जो

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

नीतियाँ बनाई जाती है वे सब राजनीति के अन्तर्गत आती हैं। अंग्रेजी में राजनीति 'पॉलिटिक्स' का पर्याय है जो यूनानी शब्द पोलिस से बना है, जिसका अर्थ नगर या राज्य होता है। सही रूप नीतिपूर्वक ढंग से राज्य चलाने के तरीके को राजनीति कहा जाता है।

राजनीति वर्तमान समय में मानव जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुकी है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा है जो इसके प्रभाव से अछूता हो। गाँव से लेकर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक की समस्याओं का समाधान राजनीति के माध्यम से किया जा रहा है, जिसके कारण इससे जुड़े विषयों का सम्यक् विश्लेषण करना कभी–कभी चुनौतीपूर्ण हो जाता है। यूनानी चिंतकों ने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी के रूप में स्वीकार किया है और यह माना है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से राजनीति से जुड़ा होता है। उन्होंने केवल राज्य और समाज की वर्तमान स्थिति पर ही नहीं, बल्कि यह भी विचार किया कि वे कैसे होने चाहिए। इस प्रकार उन्होंने राजनीति को आदर्शवादी नैतिक दृष्टि प्रदान करते हुए उसे विकसित करने का प्रयास किया। वस्तुतः राजनीति ही समाज को मार्गदर्शन प्रदान करती है। राजनीति के विषय में गाँधी जी अपने विचार प्रकट करते हैं– ''राजनीतिक मूल्य वर्तमान समय में हमें सांय की तरह चारों ओर से घेरे हुए हैं। जिसके चंगुल से बचने की कितनी ही कोशिश क्यों न करें। किन्तु उससे बाहर नहीं निकल सकते।''[2]

वर्तमान समय की राजनीति का अभिप्राय धोखाधड़ी, स्वार्थ, चापलूसी, बेईमानी है। आज की व्यवस्था में नैतिकता कहीं भी नजर नहीं आती। नागरिक सुरक्षा जनहित तथा देशहित की बात कहना तो अजीब लगता है। लेखिका गीताश्री ने अपने कथा साहित्य में राजनीतिक व्यवस्था का चित्रण बहुत कम किया है। लेकिन जितना चित्रण किया है वह एकदम सटीक चित्रण है।

गठबन्धन की राजनीति

गीताश्री के कथा साहित्य में राजनीतिक दलों की अदला–बदली, विभिन्न राजनीतिक मुद्दों की प्रस्तुति तथा राजनीति की आड़ में जनता के शोषण जैसे पहलुओं का स्पष्ट चित्रण मिलता है। यद्यपि उन्होंने अपने साहित्य में राजनीति पर अत्यधिक विस्तार से लेखन नहीं किया है, फिर भी जितना भी लिखा है, उसके माध्यम से समकालीन राजनीति के वास्तविक स्वरूप को उजागर किया है। वर्तमान समय में अधिकांश राजनीतिक दल राजनीतिक मूल्यों के पालन से विमुख होते दिखाई देते हैं और राजनीति में राष्ट्रीयता तथा देशभक्ति की भावना का निरंतर क्षरण हो रहा है। आज स्थिति यह है कि अनेक दल सत्ता प्राप्ति के लिए जिस पक्ष को अधिक सशक्त देखते हैं, उसके साथ गठबंधन करने में संकोच नहीं करते। गठबंधन सरकार एक संसदीय व्यवस्था का ऐसा रूप है, जिसमें अनेक राजनीतिक दल मिलकर शासन करते हैं, परिणामस्वरूप किसी एक दल का पूर्ण प्रभुत्व स्थापित नहीं हो पाता।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

'हसीनाबाद' उपन्यास में लेखिका ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से यह दिखाया है कि रामबालक सिंह चुनाव में सफलता प्राप्त करने के लिए किस प्रकार गोमली का स्वार्थपूर्ण उपयोग करता है। वह उसे अनेक प्रकार के प्रलोभनों और आश्वासनों के माध्यम से अपने पक्ष में चुनाव प्रचार करने के लिए प्रेरित करता है। परिस्थितियों और प्रभाव के कारण गोमली भी उसकी बातों से प्रभावित हो जाती है और अंततः उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर उसके पक्ष में सक्रिय रूप से जुड़ जाती है। ''गोलमी और रज्जो ने रामबालक सिंह के लिए चुनावों तक गाने का अनुबंध कर लिया था। मगर उन्हें यह नहीं पता था कि अनुबंध जिसके खिलाफ है, वह बवाल मचा देगा। वह घमासान करने में माहिर है। रामबालक सिंह पिछली बार भी रामखिलावन से हारे थे जिसके तरकस में हमेशा तीर रहते हैं। वैसे भी राजनीति खिलाड़ियों का तरकस हमेशा भरा होना चाहिए। रामखिलावन काफी समय से राजनीति करते हुए आ रहे थे, उन्हें पता था कि कौन सा तीर कब चलाना है और कौन सा दांव कब खेलना है। दांव–पेच खेलते हुए ही उनकी पूरी जवानी निकली थी।''[3]

गोलमी रामबालक सिंह के समर्थन में चुनावी मैदान में उतरती है और अपने नृत्य तथा गीतों के माध्यम से उनके पक्ष में व्यापक प्रचार–प्रसार करती है। उसके प्रयासों का परिणाम यह होता है कि रामबालक सिंह चुनाव जीतने में सफल हो जाता है। दूसरी ओर, वैशाली संसदीय सीट से रामखिलावन पराजित हो जाता है, जबकि पार्टी भी पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं कर पाती। परिणामस्वरूप एक खिचड़ी सरकार का गठन होता है, जो स्वभावतः अस्थिर होती है और अधिक समय तक टिक नहीं पाती।

''ठाकुर सजावल सिंह की आशंका बहुत ही जल्द सही साबित हुई। पिछली सरकार छह महीने मे ं ही डगमगाने लगी थी। जल्द ही चुनाव होने की आशंका जोर पकड़ने लगी। आपस में दल लड़ने लगे थे। खींचातानी होने लगी थी। इस खींचातानी में सारे सिद्धांत सरकार से मांग न पूरा होने पर समर्थन वापस ले लिया। और देश में जल्द ही चुनाव की आहट दोबारा आ गई। सभी चुनाव दल एक बार फिर से दो साल के अंदर जनता के सामने थे।''[4]

गीताश्री ने अपने कथा साहित्य में राजनीतिक मूल्यों के विविध आयामों को उजागर करते हुए उनके अंतर्निहित यथार्थ का प्रभावशाली अनावरण किया है। गठबंधन की राजनीति, सरकार के उस स्वरूप को दर्शाती है जिसमें विभिन्न राजनीतिक दल आपसी सहयोग से सत्ता का गठन करते हैं, किंतु व्यवहार में यह व्यवस्था प्रायः स्वार्थसिद्धि का माध्यम बन जाती है। ऐसी परिस्थितियों में सत्तारूढ़ दल जनहित की अपेक्षा अपने व्यक्तिगत और दलगत लाभ को अधिक महत्व देते हैं।

गोमली के चुनाव में विजयी होने के पश्चात जब उसे सांस्कृतिक मंत्री का दायित्व प्राप्त होता है, तब उसके लिए कार्य करना अत्यंत कठिन हो जाता है। सत्ता के भीतर व्याप्त अंतर्विरोध और स्वार्थपूर्ण

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

राजनीति उसके मार्ग में निरंतर बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। "दिल्ली की गरम शाम में AC भी फेल हो रहा था। फिरोजशाह रोड़ पर गाड़ियों की आवाजें आ रही थी। उसने घबराकर ड्राइंग रूम का दरवाजा खोल दिया। आंखें बंद करके सोफे पर सिर टिका कर सुबक पड़ी।"[5] यह उद्धरण उसकी मानसिक स्थिति और राजनीतिक दबावों को सजीव रूप में व्यक्त करता है।

दल–बदल राजनीति

'दल–बदल' भारतीय राजनीति की एक गंभीर और चिंताजनक समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है। वर्तमान समय में यह प्रवृत्ति अत्यंत सामान्य होती जा रही है। कई बार इसे कुछ राजनीतिक दलों के सत्ता परिवर्तन या आत्मसमर्पण के रूप में भी देखा जाता है। सत्ता प्राप्ति की लालसा और पद के प्रति अत्यधिक आसक्ति ने देश के राजनीतिक परिवेश को इस हद तक प्रभावित किया है कि विधायकों के लिए सिद्धांत, आदर्श और नैतिक मूल्यों का महत्व निरंतर कम होता जा रहा है। परिणामस्वरूप, उनके भीतर अवसरवादिता की प्रवृत्ति अधिक प्रबल होती दिखाई देती है। डॉ० अरुणा दुबलिश के शब्दों में ''मूल्यों के अभाव में राजनीति छिछली मानसिकता का प्रतीक बन गई है।''[6]

गीताश्री ने अपने कथा साहित्य में विधायकों की इस दल–बदलू प्रवृत्ति को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। हसीनाबाद में गोमली, रामबालक सिंह से प्रभावित होकर उनके पक्ष में चुनाव प्रचार में सक्रिय रूप से भाग लेती है और पूरे मनोयोग से प्रयास करती है। चुनाव परिणामों में वैशाली संसदीय सीट से रामखिलावन पराजित हो जाते हैं, जबकि रामबालक सिंह विजय प्राप्त करते हैं। इस जीत से ठाकुर सजावल सिंह अत्यंत प्रसन्न होते हैं, किंतु चूँकि सरकार गठबंधन (खिचड़ी सरकार) के रूप में बनती है, इसलिए उसकी स्थिरता संदिग्ध बनी रहती है। ठाकुर सजावल सिंह राजनीतिक परिस्थितियों को भाँप लेते हैं और यह समझ जाते हैं कि यह सरकार अधिक समय तक टिकने वाली नहीं है। इसी कारण वे आगामी दो वर्षों के भीतर पुनः चुनाव की तैयारी करने की घोषणा कर देते हैं।

उपन्यास 'हसीनाबाद' में चुनाव जीतने के बाद ठाकुर सजावल सिंह कहते हैं ''आप लोग अब जाएं। कल मीडिया में जानकारी देकर बाकी काम करेंगे और चुनावों के लिए यही रणनीति रहेंगी। बस हो सकता है प्रत्याशी बदल जायें। आप लोग गोलमी कुमारी जी को भी प्रत्याशी के रूप में तैयार रखिएगा। ठाकुर सजावल सिंह ने यह एक नई बात कह दी थी। अरे! ये क्या? ठाकुर साहब! मैं तो केवल एक लोक–नृतकी हूं। मैं प्रत्याशी? जी आप प्रत्याशी! और बाकी बातों पर आप गौर न करें। आप लोग तैयारी करें।''[7]

ठाकुर सजावल सिंह की आशंका शीघ्र ही सत्य सिद्ध हो जाती है। बनी हुई सरकार मात्र छह महीने के भीतर ही अस्थिर होने लगती है और पुनः चुनाव की संभावनाएँ प्रबल हो जाती हैं। दलों के बीच आपसी

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

संघर्ष बढ़ जाता है तथा छोटे–छोटे दल, अपने हित पूरे न होने पर, बड़ी पार्टी से समर्थन वापस ले लेते हैं। परिणामस्वरूप, राजनीतिक परिदृश्य पुनः चुनाव की ओर बढ़ता है और दो वर्षों के भीतर ही दल जनता के समक्ष फिर से उपस्थित हो जाते हैं। इस प्रकार दल–बदल की इस गंभीर समस्या का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि इस पर नियंत्रण तभी संभव है, जब सभी राजनीतिक दल सामूहिक सहमति से कुछ नैतिक मूल्यों का निर्धारण करें और उनके प्रति ईमानदारी से प्रतिबद्ध रहें।

वंशानुगत राजनीति

हसीनाबाद उपन्यास में यह चित्रित किया गया है कि रामबालक सिंह पिछले चुनाव में रामखिलावन से पराजित हो चुके थे। रामखिलावन एक अनुभवी और दक्ष नेता के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं, जो लंबे समय से राजनीति में सक्रिय रहे हैं। उनके पास राजनीतिक सूझ–बूझ और रणनीति की गहरी समझ है उन्हें भली–भाँति ज्ञात है कि किस समय कौन–सा कदम उठाना है और कौन–सा दांव खेलना है। राजनीतिक चालों और दांव–पेचों में उन्होंने अपना अधिकांश जीवन व्यतीत किया है। ''रामखिलावन सिंह के बाबूजी भी कुशल राजनेता रहे थे और आज से नहीं वह भी अंग्रेजों के समय से ही। अब उन्होंने अपनी विरासत सौंप दी थी अपने बेटे रामखिलावन को।''[8] राजनीति में वंशवाद की परंपरा किस प्रकार पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही है। राजनैतिक वंशवाद का एक प्रमुख कारण व्यक्ति–पूजा की प्रवृत्ति है, जिसके अंतर्गत किसी विशेष व्यक्ति को अत्यधिक महत्व देकर उसकी प्रतिष्ठा को स्थायी रूप दे दिया जाता है। भारत के संदर्भ में नेहरू, इंदिरा आदि ऐसी ही महान शख्सियत रहे हैं।

हसीनाबाद उपन्यास में लेखिका गीताश्री ने राजनीति में बढ़ते परिवारवाद और वंशवाद को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। "रामबालक सिंह, जो जेपी आंदोलन से जुड़े थे, प्रारंभ में राजनीति में परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं, किंतु समय के साथ वे अनुभव करते हैं कि राजनीति में वंशवाद और अधिक गहराता जा रहा है।"[9] उपन्यास यह संकेत करता है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवारवाद एक गंभीर चुनौती के रूप में उपस्थित है, जहाँ राजनीतिक सत्ता को एक ही परिवार तक सीमित रखने का प्रयास किया जाता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए चुनावों में विभिन्न अनुचित साधनों का प्रयोग किया जाता है, जिससे भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिलता है। ठाकुर सजावल सिंह का चरित्र इसी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने पुत्र रमेश को राजनीति में स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। इसके लिए वे चुनाव प्रचार में अनावश्यक व्यय और अनैतिक उपायों का सहारा लेते हैं। दूसरी ओर, रमेश का व्यवहार भी धीरे–धीरे अनुशासनहीन और दबंग होता जाता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव ठाकुर साहब की राजनीतिक छवि पर पड़ता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

इस प्रकार, गीताश्री ने अपने कथा साहित्य में वंशानुगत राजनीति के यथार्थ को स्पष्ट रूप से उजागर किया है। परिवारवाद भारतीय लोकतंत्र के लिए एक अभिशाप के रूप में सामने आता है, क्योंकि इससे जनता को योग्य और सक्षम नेतृत्व प्राप्त नहीं हो पाता। राजनीति में वंशवाद की वृद्धि के कारण संस्थागत कार्यप्रणाली प्रभावित होती है तथा योग्यता और प्रतिभा को हाशिए पर धकेल दिया जाता है।

राजनीतिक में धन–लोलुप्ता

वर्तमान समय में राजनीति अनेक राजनेताओं के लिए स्वार्थ–सिद्धि और सत्ता प्राप्ति का माध्यम बनकर रह गई है। उनके लिए राष्ट्रीय हित प्रायः व्यक्तिगत आवश्यकताओं और लाभों की पूर्ति के बाद ही महत्व रखता है। आज की राजनीति चुनाव–केंद्रित हो गई है और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में चुनाव कई बार एक औपचारिकता या दिखावे तक सीमित प्रतीत होते हैं। इसके साथ ही पूँजीपति वर्ग भी विभिन्न राजनीतिक दलों को आर्थिक सहयोग प्रदान कर अपने अनुकूल नीतियाँ बनवाने का प्रयास करता है, जिनका देशहित से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता।

ठाकुर सजावल सिंह अपने बेटे को राजनीति विरासत में देना चाहता है और चुनाव जीतने के लिए साम–दाम–दण्ड–भेद प्रत्येक तरह की नीति अपनाता है। ''रमेश के अंदर एक आग थी, जिसमें वो हर पल जल रहा था और वह उसमें बाकी सब कुछ जला देना चाहता था। मगर समझता था कि एक सीमा के बाहर जाने पर उसके सारे ऐश–मौज गायब हो सकते हैं। बाबा को अगर पार्टी ने पद से हटा दिया तो वह कहीं का नहीं रहेगा। .... उस्मान ने उसे बहुत समझाया कि बाबा को अगर कुछ हो गया तो उनकी राजनीतिक विरासत को केवल उसे ही संभालना है और है ही कौन, जो संभालने आएगा?''[10]

आज की परिस्थितियों में अनेक लोग राजनीति में प्रवेश इसलिए करना चाहते हैं कि वहाँ से आर्थिक लाभ अर्जित कर सुख–सुविधाओं से युक्त जीवन व्यतीत किया जा सके। राजनीति में आने के बाद राजनेताओं के परिजन भी अपने स्वार्थों की पूर्ति में सक्रिय हो जाते हैं और विभिन्न माध्यमों से लाभ उठाने लगते हैं। चुनाव जीतने के उद्देश्य से ये सगे–संबंधी भी राजनेताओं के साथ मिलकर अनेक प्रकार की रणनीतियाँ और चालें चलते हैं।

स्त्री का राजनीति में प्रवेश

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में महिलाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। शिक्षा के प्रसार के साथ उनमें जागरूकता और आत्मविश्वास का विकास हुआ है। आज महिलाएँ राजनीति, विज्ञान, व्यवसाय, साहित्य तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

रही हैं। वे मानसिक और बौद्धिक स्तर पर पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए अपनी क्षमता को सिद्ध कर रही हैं।

उपन्यास में गोमली का चरित्र इसी सशक्त स्त्री–छवि को प्रस्तुत करता है। वह चुनाव प्रचार में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए एक कलाकार और राजनेता दोनों रूपों में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करती है तथा अंततः चुनाव जीतने में सफल होती है। इसके उपरांत उसे राजनीतिक सत्ता में संस्कृति मंत्री का पद प्राप्त होता है, किंतु उसके इस उभार को पार्टी के अन्य मंत्री सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाते। कुछ लोग यह भी टिप्पणी करते हैं कि एक 'नचनिया' को संस्कृति मंत्री कैसे बना दिया गया। जैसे ही वह कोई पत्र लिखती, आदेश जारी करती या कोई वक्तव्य देती, विरोधी पक्ष के रामखिलावन से जुड़े अधिकारी और पत्रकार उसकी प्रत्येक गतिविधि की आलोचनात्मक समीक्षा करने लगते हैं। अगले ही दिन समाचारों में इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है– 'अनपढ़ संस्कृति मंत्री का नया कारनामा।'

गोलमी कहती है– ''मैं इस्तीफा देना चाहती हूँ। मैं इस फैसले पर अड़िग हूँ। मुझे अपनी दुनिया में वापस जाना है। मैं रास्ता भटक कर इस तरफ आ गई थी। मुझे चन्द महीनों में ही अहसास हो गया है कि यह दुनिया मेरी नहीं है, मेरे लिए नहीं है। मैं बदनामी से नहीं डरती, मगर मैं सुखचैन इसके लिए नहीं गंवा सकती। मेरा सुख चैन किसी और लोक में है आप मुझे मुक्त कर दें।''[11]

गीताश्री ने यद्यपि राजनीति विषय पर व्यापक रूप से लेखन नहीं किया है, फिर भी अपने कथा साहित्य में उन्होंने भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका का राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, उनकी वर्तमान स्थिति, उनसे जुड़ी समस्याएँ तथा उनके भविष्य की संभावनाओं का सूक्ष्म अध्ययन दिखाई देता है। स्पष्ट है कि पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री को राजनीति में स्थायित्व प्राप्त करने से रोकने का प्रयास करती है। यद्यपि आज महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी वे स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में अनेक बाधाओं का सामना करती हैं। वर्तमान समय में राजनीति में महिलाओं की स्थिति में सुधार तो हो रहा है, किंतु इसे सुदृढ़ बनाने के लिए उन्हें निरंतर सक्रिय और ऊर्जावान रहकर प्रयास करना आवश्यक है। देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर एक महिला का पुनः आसीन होना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लंबे समय से राजनीति में सक्रिय रही द्रोपदी मुर्मू ने न केवल आदिवासी समुदाय का प्रतिनिधित्व किया है, बल्कि महिला नेतृत्व की सशक्त उपस्थिति भी दर्ज कराई है। अतः राजनीति में अपनी प्रभावी भागीदारी बनाए रखने के लिए महिलाओं को निरंतर सक्रिय, सजग और दृढ़ संकल्पित रहना होगा।

निष्कर्ष :–

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

आज का समाज एक राजनीतिक दंगल बन गया है, जिसमें हर कोई दांव लगाने में व्यस्त है। राजनीतिक मूल्यों के अवमूल्यन की स्थिति में महात्मा गांधी जैसे समाज सुधारक व पथप्रदर्शक की नितांत आवश्यकता है, जिससे समाज के प्रत्येक कोने में शिक्षा विकास और अधिकारों का प्रकाश पहु ंच सके। गीताश्री ने अपने उपन्यासों में कहानियों में ऐसे पात्रों की संरचना कर राजनीतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना पर बल दिया है ताकि राजनीति का वास्तविक उद्देश्य परिकल्पित हो।

गीताश्री ने अपने उपन्यासों के जरिए राजनीतिक मूल्यों की संकटापन्न अवस्था पर चिंता व्यक्त की है, जिनका अभाव लोकतंत्र जैसी सुदृढ़ व्यवस्था के लिए बहुत बड़ा संकट है, जिससे देश के नागरिकों के बीच देशभक्ति, सहयोग, आपसी प्रेम और त्याग भावना जैसे भाव विलुप्त हो जाते हैं। राजनीतिक मूल्यों में गिरावट आपसी वैर–द्वैष का पोषण करने के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक एकता के लिए भी संकट पैदा करती है। सत्तामदांध नेता विभिन्न समुदायों के बीच चुनावी राजनीति का वीभत्स खेल खेलते हैं, जिससे राष्ट्र रूपी संगठन बिखरने लगता है और हिंसा, चुनावी धांधली व भ्रष्टाचार जैसे बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। महात्मा गाँधी के अनुसार, ''वर्तमान में राजनीति हमें साँप की तरह चारों ओर से घेरे हुए है, जिसके चंगुल से हम कितनी ही कोशिश क्यों न करें, निकल नहीं सकते।''[12]

हसीनाबाद केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि समकालीन भारतीय समाज की राजनीतिक और सामाजिक संरचना का गहन दस्तावेज़ है। गीताश्री ने इस उपन्यास के माध्यम से यह प्रभावशाली रूप से प्रतिपादित किया है कि राजनीति किस प्रकार समाज के हाशिए पर स्थित वर्गों के जीवन को प्रभावित करती है। उपन्यास में चित्रित 'हसीनाबाद' एक प्रतीकात्मक स्थल के रूप में उभरता है, जहाँ सत्ता, प्रशासन और समाज के बीच असंतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राजनीतिक तंत्र द्वारा जनता का उपयोग केवल वोट बैंक के रूप में किया जाना, भ्रष्टाचार का व्यापक प्रसार तथा जनहित की निरंतर उपेक्षा ये सभी तत्व राजनीतिक मूल्यों के पतन की ओर संकेत करते हैं। इसके साथ ही, सामाजिक असमानता और आर्थिक विषमता को भी राजनीति के संदर्भ में गहराई से प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सत्ता संरचना समाज के कमजोर वर्गों के लिए किस प्रकार चुनौतीपूर्ण बन जाती है। विशेष रूप से, उपन्यास में स्त्री पात्रों की स्थिति यह दर्शाती है कि वे दोहरे शोषण का सामना करती हैं एक ओर सामाजिक बंधनों के कारण और दूसरी ओर राजनीतिक उपेक्षा के कारण। इस प्रकार, यह कृ ति स्त्री विमर्श को भी राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में स्थापित करती है।

अंततः हसीनाबाद न केवल राजनीतिक यथार्थ को उजागर करता है, बल्कि पाठकों को सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों और लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रति जागरूक करने का कार्य भी करता है। यह कृति समकालीन हिन्दी साहित्य में राजनीतिक विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक सिद्ध होती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 113-121

संदर्भ सूची :–

1. डॉ० मोहिनी शर्मा, (1986), हिन्दी उपन्यास व जीवन मूल्य, जयपुर साहित्यगार, पृष्ठ 173
2. प्रभात कुमार भट्टाचार्य, गाँधी दर्शन, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 27
3. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 150
4. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 167
5. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 218
6. डॉ० अरूणा दुबलिश, साठोत्तर हिन्दी तथा बाँग्ला कविता में मूल्यबोध, मेरठ, पृष्ठ 48
7. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 164
8. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 150
9. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 148
10. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 149
11. गीताश्री, (2017), हसीनाबाद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 223
12. प्रभात कुमार भट्टाचार्य, गाँधी दर्शन, पृष्ठ 27 से उद्धृत